कवि प्रसाद की सार्वभौमिक आनंदवादी दृष्टि

डॉ. आर.पी. वर्मा,
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय गोसाईखेड़ा,
जनपद–उन्नाव, उ.प्र.

इस नील विषाद गगन में,
सुख चपला सा दुःख घन में,
चिर विरह नवीन मिलन में,
इस मरुमरीचिका वन में,
उलझा है चंचल मन–कुरंग।

जी हाँ, यह चंचल मन–रुपी कुरंग इस मरुमरीचिका जगत् रूी वन में उलझ जाता है और दुःख भोगता है। दुःख से करुणा का प्रसार होता है तो सुख से आनंद एवं उत्साह। संपूर्ण भूमि पर मूलतः सुख और दुःख दो ही भाव हैं। प्रसाद–साहित्य में ये दोनों ही भाव सतत प्रवाहमान हैं। गोमुखी गंगा की धारा ज्यों–ज्यों आगे बढ़ती है, त्यो–त्यों तीव्र होती जाी है। कविता का मूल भले ही वेदना हो, किन्तु उस वेदना में भी एक आनंदवादी दृष्टि छिपी होती है। कवि के आनंदवादी चिंतन में 'बात कुछ छिपी हुई है गहरी' जैसे सत्य का अन्वेषण है। कविता आत्मा की अनुभूति है। कवि हृदय के दान में ही आनंद का अनुभव करते हैं। सार्वभौमिकता का शाब्दिक अर्थ होता है सम्पूर्ण भूमि पर व्याप्त। जब कोई रचनाकार किसी रचना का निर्माण करता है तो उसके मूल में उसकी स्वयं की व्यक्तिगत दृष्टि नहीं, बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि के जीवों की दृष्टि निहित होती है अर्थात् वह व्यष्टि को देखता है। जैसे–जैसे साहित्य का विकास होता चलता है वह नई दिशाएं तलाशता चलता है। कविवर जयशंकर प्रसाद साहित्यिक चुनौतियों को स्वीकार करते हुये जिस आनन्द की खोज में प्रवृत्त हुए, उस आनन्दवादी दृष्टि ने सम्पूर्ण सृष्टि के मानवों को नई चिंतन–दृष्टि दी। कवि की कविताओं में आत्म–प्रसार का जो रूप दिखायी देता है, उसमें विश्व–मंगल की भावना छिपी है। 'झरना', 'आंसू', 'लहर'' एवं 'कामायनी' जैसी काव्यकृतियों में कवि की सार्वभौमिक आनन्दवादी दृष्टि का परिचय मिलता है। मानव–हृदय के भावों को कवि ने झरना मं अभिव्यक्त किया है। कवि को पृथ्वी की ओर आती हुई सूर्य की किरण वेदना दूती–सी प्रतीत होती है –

धरा पर झुको प्रार्थना सदृश,
मधुर मुरली सी फिर भी मौन,
किसी अज्ञात विश्व की विकल–
वेदना–दूती–सी तुम कौन?

वेदना एक ऐसा भाव है, जिसमें उदात्त भावना छिपी होती है। कवि की सम्पूर्ण काव्य–रचनाओं के मूल में इसी वेदना के सौंदर्य के दर्शन होते हैं। कवि के गीतों में आत्म–प्रसार का संन्दर रूप दिखायी देता है। आंसू की परिसमाप्ति करुणा की भूमि पर होती है तो 'कामायनी' की समाप्ति आनन्द की भूमि पर। 'लहर' एक प्रतीक–काव्य है जिसमें प्रेमपरक, सौंदर्यपरक, करुणामूलक, उद्‌बोधनपरक तथा ऐतिहासिक प्रतिध्वनियों से सम्बद्ध गीत हैं। इस संग्रह की कविताओं में दुःख एवं सुख दोनों भाव एक साथ इस प्रकार संलग्न हैं कि उनमें एक विशेष आनन्द के दर्शन होते हैं। कवि अपने अनुराग को नभ में फैलाना चाहते हैं–

मेरा अनुराग फैलने दो नभ के अभिनव कलरव
में।

'लहर' की प्रेमपरक कविताओं में आत्म–प्रसार का भाव है, जो कवि की सार्वभौतिक दृष्टि का परिचय देता है। इस संग्रह का पहला ही गीत मानव मन में करुणा का प्रसार करता है।

कवि की यह इच्छा है कि सम्पूर्ण सृष्टि में मधु–मंगल की वर्षा हो। कवि यह इच्छा व्यक्त करता है कि जला हुआ जगत् वृन्दावन वन जाए। आज संसार में चारों ओर निराशा और विषाद की कामिला विद्यमान है तथा कवि उसे ही दूर करना चाहता है। कवि का कथन है, इस सृष्टि के जितने भी अभावग्रस्त लोग हैं, उनका स्वप्न कभी न टूटे –

वक्षस्थल में जो छिपे हुए–
सोते हों हृदय अभाव लिए–
उनके स्वप्नों का हो न प्रात।

कवि सम्पूर्ण विश्व में आनन्द और स्नेह बांटना चाहते हैं –

खिंच जाए अधर पर वह रेखा–
जिसमें अंकित हो मधु लेखा,
जिसको यह विश्व करे देखा,
वह स्मिति का चित्र बना जा रे।

कविवर प्रसाद अगर जागरण का संदेश देते हैं और अपनी इच्छा व्यक्त करते हैं कि वह ऐसे स्थान पर जाना चाहते हैं, जहां श्रम के पश्चात् विश्राम मिलता हो –

श्रम–विश्राम क्षितिज वेला से–
जहां सृजन करते मेला से–
अमरण जागरण उषा नयन से–
बिखराती हो ज्योति घनी रे।

विश्व में व्याप्त करुणा का आवाहन कवि ने अनेक स्थलों पर किया है। 'अशोक की चिंता', 'शेरसिंह का शस्त्र–समर्पण' का शस्त्र–समर्पण जैसी ऐतिहासिक कविताओं में कवि की यही करुणापरक सार्वभौमिक दृष्टि दृष्टव्य है –

संतुति के विक्षत पग रे।
वह चलती है डगमग रे।
अनुलेप सदृश तू लग रे।
मृदुदल बिखेर इस मग रे।

कवि की अन्तिम रचना 'कामायनी' एक 'प्रतीक रूपक' है, जिसमें पुराण को आधार बनाकर सांकेतिक अर्थ–प्रतीति करायी गयी है। मानव के माध्यम से मानवता का विकास इस कृति का संदेश है। 'कामायनी' में आनन्दवादी दर्शन है। कवि ने इस कृति में कर्म में ही सौंदर्य के दर्शन कराते हुए आनन्द का संदेश दिया है। 'कामायनी' की अर्थ–संरचना जितनी सरल दिखायी देती है, वह उतनी सरल नहीं, बल्कि जटिल है। 'कामायनी' अपने युग को पूरी तरह आंकलित करती है। इसमें बुद्धिवाद, विकासवाद, उदारवाद, भौतिकतावाद इत्यादि का यथोचित समावेश है। कवि अपनी दृष्टि, अपने विचार व्यक्त करते हुये कहता है –

हार बैठे जीवन का दांव, जीतते मर कर जिसको
वीर।
कर्म का भोग भोग का कर्म, यही जड़ का चेतन
आनन्द।
और को तुम सुनते नहीं, विधाता का मंगल
वरदान।
शक्तिशाली हो विजयी बनो, विश्व में गूँज रहा
जयगान।

यहाँ हम अनुभव कर सकते हैं कि प्रसाद जी विश्व को आनन्दमय देखना चाहते हैं, उन्हें ध्यान

में रखकर कविता लिखते हैं। वह 'काम' के द्वारा संदेश देते हैं–

यह नीड़ मनोहर कृतियों का, यह विश्व कर्म स्थल है।
है परम्परा लग रही, ठहरा जिसमें जितना बल है।

'कामायनी' में उठाई गई समस्याएं सम्पूर्ण विश्व की समस्याएं हैं, उन्हें तभी समझा जा सकता है, जब हमारी दृष्टि विशुद्ध मानवतावादी हो। हम सभी जानते हैं कि आज मानवता विनाश के कगार पर है, व्यवस्था ढह और टूट रही है। ऐसी स्थिति में मानवीय करुणा का ही संबल रह गया है। व्यक्ति धीरे–धीरे आत्मकेन्द्रित हो रहा है, केवल अपने लिए जीना चाहता है, अतः कवि व्यक्ति को इस संकुचित मनः स्थिति से उबरने का संदेश देते हैं। 'कामायनी' का अपना एक सौंदर्य है। प्रसाद जी विकासशील और उद्धार सामाजिक प्रवृत्तियों के निरुपक हैं। उनकी साहित्य सृष्टि एवं दृष्टि प्रगतिशील तत्व समेटे हैं। प्रसाद का काव्य साहित्य ही नहीं, सम्पूर्ण साहित्य 'कला कला के लिए' को ध्यान में रखकर नहीं, 'कला जीवन के लिए' को ध्यान में रखकर सर्जित हुआ है। साहित्य कुद नहीं, जीवन की वास्तविकता को पाठक के समक्ष प्रस्तुत करता है। प्रसाद की कविताओं में समसामयिक स्थितियों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत हुआ है। प्रसाद की कविताओं में एक नई कल्पनाशीलता, नूतन जागरूक चेतना, मानसवृत्तियों की सूक्ष्मता और प्रौढ़तर पकड़, विस्मय, संशय और कौतूहल दिखायी देता है। कवि ने कल्पनात्मक और भावनात्मक प्रवृत्तियों को प्रमुखता दी है। कवि अपने चिंतन से एक समन्वय–सूत्र हमारे सामने रखना चाहता है। जिस प्रकार साहित्य एवं समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है, वैसे ही साहित्य और दर्शन का भी अंतरसंबंध होता है। 'कंकाल', 'इरावती' जैसे उपन्यासों के साथ 'कामना','लहर' – जैसे उपन्यासों के साथ 'कामना', 'लहर', 'आंसू' एवं 'कामायनी' जैसी रचनायें प्रसाद के जीवन–दर्शन एवं सार्वभौमिक आनन्दवादी दृष्टि को अभिव्यक्ति देने में सक्षम है। जब आदर्श और यथार्थ का मिलन होता है, तभी जीवन का व्यावहारिक पक्ष सबल होता है। परमतत्व चिंतन का विषय नहीं, बल्कि वह पूर्ण व्यवहार्य भी हो, तभी मानव–जीवन को सार्थकता प्राप्त होती है। कवि प्रसाद ने अपनी इसी मूल दृष्टि को जीवन–धरातल पर स्थापित करने के लिए दर्शन का सहारा लिया है। इस प्रत्यभिज्ञा–दर्शन का मूल आनन्द है, जो कवि की रचनाओं में व्याख्यापित है। 'कामायनी' की श्रद्धा, मनु भौर इड़ा सार्वभौमिक पात्र है। श्रद्धा स्वयं जीवन के विराट् आनन्द को प्राप्त करने की युक्ति बताती है। संसार ज्वालाओं का मूल नहीं है, बल्कि ईश्वर का रहस्यमय वरदान है। यह तो मानव की अपनी दृष्टि है कि वह इसे किस रूप में देखना चाहे। सुख–दुःख के विकास में जीवन का सत्य पलता है। यह भूमि सबको मधुमयदान देती है। समरसता जीव का नित्य अधिकार है। योगी जीवन की खोज तप करके पूर्ण करते हैं तो कर्मयोगी कर्म के द्वारा। निरन्तर होने वाला परिवर्तन सृष्टि का नियम है और इसी के बीच नित्य नवीन जीवन का आनन्द खिलता है। हम इसे यों भी कह सकते हैं कि परिवर्तन ही सृष्टि है, जीवन है, सुख–दुःख और तप है। जीवन का केन्द्र आकर्षण से परिपूर्ण है और मानवीय पुरुषार्थ के बल पर समृद्धि अपने आप सुलभ हो जाती है। मानव के लिये इस पृथ्वी का हर कोना अगाध सामग्री से पूर्ण है। अब यह तो उसके ऊपर है कि वह उसे कैसे प्राप्त करे। प्रसाद कीी कविताओं में युगीन नवीन जीवन–दृष्टि निहित है। कवि व्यक्त करते हैं कि काम मंगलमय है, त्याज्य नहीं, दुःख में ही सुख छिपा है, विषय का उन्मीलन सुन्दर है, परिवर्तन और विकास ही जीवन के नियम है, प्रकृति लीलामयी है। कर्म और भोग जीवन की स्वाभाविक एवं स्वस्थ प्रक्रियाएं हैं। मानव को जडत्र नहीं, चेतन बनना

है। ये ऐसे विचार हैं, जो कवि की सार्वभौमिक दृष्टि का परिचत देते हैं। साहित्यकार जीवन का दान देता है, किन्तु दान लेने वाला भी तो उचित अधिकारी होना चाहिए।

प्रत्यभिज्ञा–दर्शन को महत्व देने वाले कवि प्रसाद ने जगत् को ज्ञान, कर्म एवं भक्ति तीनों की दृष्टि से तौला है तथा उसे समस्त समरस माना। सम्पूर्ण भूमि में व्याप्त करुणा, प्रेम, दया, ममता, शक्ति, उत्साह – जैसे तत्व कवि के काव्य की विशिष्टत बन गए हैं। कवि व्यष्टि–साधक नहीं, अपितु समष्टि से होकर व्यष्टि से पूर्णतया समर्थित है। वास्तव में मानव–मन में उत्पन्न आनन्द सुख और दुःख के बीच रहने वाली चित्त की एक अवस्था का नाम है। यह अवस्था सृष्टि के सम्पूर्ण जीवों के जीवन की सबसे बहुमूल्य वस्तु है। जीव आत्मस्वरूप है और आत्मा आनन्दमय परमात्मा है। कल्याणमय, करुणामय, आनन्द स्वयं परमात्मा श्रद्धा, भक्ति एवं प्रेम से प्राप्त किये जाते हैं। प्रसाद का यह मानना है कि साहित्य आत्मानन्द की साधना से ही पूर्ण एवं महिमाशाली होता है। इसीलिए प्रसाद–साहित्य की प्रदेयता आज भी है तथा कल भी रहेगी। आनन्द परमतत्व है तथा इसी आनन्द का जयघोष कवि की कविताओं का प्राणतत्व है। यदि जीवन जीवन में उल्लास है तो आनन्द है और आनन्द की भावना से सब दुष्कर्म भस्म हो जाते हैं। पाप का विनाश हो जाता है। यही कारण है कि प्रसाद ने अपने साहित्य द्वारा मानव को जीवन में आनन्द की अग्नि प्रज्वलित करने का संदेश दिया है, ऐसे अग्नि, जो जलाती नहीं, वह ऊष्ण नही, बल्कि शीतल है, शान्ति देती है। कवि कामना करते हुए कहता है –

इस स्वप्नमयी संसृति के सच्चे जीवन तुम जागो।
मंगल किरणों से रंजित, मेरे सुंदरतम जागो।।

मृत्यु सार्वभौमिक सत्य है, उससे कोई नहीं बच पाया, किन्तु कवि आशावादी है। वह सम्पूर्ण विश्व की मुस्कान की कामना करते हुए कहते हैं –

फिर तम प्रकाश झगड़े में, नव–ज्योति विजयिनी होती।
हंसता फिर विश्व हमारा, बरसाता मैंजुल मोती।।

साहित्यकार अपनी रचनाओं से मानव को जीवन के सर्वोच्च आनन्द की ओर से जाता है। उसकी जड़ता समाप्त कर मनोबल बढ़ाता है तथा उसके हृदय में आनन्द एवं उल्लास भरता है। उसकी यह व्यावहारिक दृष्टि उसे फलक पर बैठाती है तथा उसके साहित्य को सार्वभौमिक बनाती है। ऐसा साहित्य पाठक को आनन्द देता है, जीवन की सच्चाईयों से अवगत कराना है, पृथ्वी का जन–जन ऐसे साहित्य को ही नहीं, अपितु साहित्यकार को भी अपने मन में बैठाता है, स्वीकार करता है। प्रसाद–साहित्य में अखण्डता, सघनता, उदात्ता, व्ययावहारिकता और आनन्द एवं सौन्दर्य के दर्शन होते हैं। जगत ऐसे ही साहित्य को स्वीकृति देता है। जो साहित्यकार जगत् की उपेक्षा करता है, वह कभी अपने साहित्य के साथ न्याय नहीं कर सकता है। प्रसाद जी पलायनवादी नहीं, आनन्दवादी हैं, जो अपने शब्दों से जन में चेतना का नव संचार करते हैं। ऐसा साहित्यकार कभी मरता नहीं, बल्कि अपनी कृतियों द्वारा हमारे बीच सदैव जीवित रहता है। निष्कर्षतः कवि के ही शब्दों में –

सबका निचोड़ लेकर तुम, सुख से सूखे जीवन में।
बरसी प्रभात हिमकण–सा, आंसू इस विश्व–सदन में।

संदर्भ

- ✓ छायावाद का सौन्दर्य शास्त्रीय अध्ययन – कुमार विमल
- ✓ निराला और पन्त काव्य के आध्यात्मिक प्रेरणा स्रोत – चन्द्रादेवी
- ✓ हिंदी काव्य के प्रमुख कार्य –– खण्ड–2 एवं खण्ड–3 – डॉ0 आर0पी0 वर्मा
- ✓ हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- ✓ हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ0 नगेन्द्र
- ✓ हिंदी साहित्य का इतिहास – लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय
- ✓ हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास – लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय
- ✓ हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – राम स्वरूप चतुर्वेदी
- ✓ कामायनी का पुनर्मूल्यांकन – राम स्वरूप चतुर्वेदी
- ✓ कामायनी के संदर्भ में प्रतीक योजना – डॉ0 आभा त्यागी
- ✓ कामायनी और ऋतम्भरा की तुलनात्मक दृष्टि – डॉ0 ऋता बाबा

Copyright © 2017, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.